परिचायक है। उन्होंने सामान्य लोगों के जीवन को उन्नत और सरस बनाने के लिए सहज-सरल-सुगम रामभक्ति का मार्ग बताया। इस भक्ति में मात्र विवेक संयुक्त श्रुति सम्मत सौहार्द्र है। उसमें जो अभीष्ट है वह-'सरल सुभाव न मन कुटिलाई, जथा लाभ संतोष सदाई' वाला है। गोस्वामीजी के इष्टदेव राम के अखिल ब्रह्मांडत्व को लेकर डॉ. विद्यारानी कहती हैं-"गोस्वामीजी के राम नर-नारायण की जीवित जागृत झाँकी दिखा रहे हैं। वे सभी स्थलों और कालों के लिए सामयिक बनकर सामने आए। गोस्वामीजी के देशकाल में तो उन्होंने आकर मंगलाशा का ऐसा प्रभात बिखेर दिया कि पराधीन हिंदू समाज एक नवीन चेतना से ओतप्रोत हो गया। उसे एक नया अद्भुत बल मिल गया। उसमें एक नई अपूर्व संगठन शक्ति आ गई। उसे एक ऐसा अजयँ रथ मिल गया जिस पर चढ़ कर वह भी राम के समान कह सकता था 'सखा धर्ममय अस रथ जाके, जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके'।" इस रूप में कहा जा सकता है कि वर्तमान स्थिति में गोस्वामीजी द्वारा चित्रित राम के मानवीशील महामानवीय कारूणिक रूप की नितांत आवश्यकता है। लोककल्याण के पथ में ही अपने जीवन की सफलता माननेवाले गोस्वामीजी ने भारतीय जनसाधारण को मानो 'राम जपु राम जपु राम जपु बाबरे' नामक महामृत्युंजयरूपी रामबाणी रामनामी मंत्र दिया। यह मंत्र मानव समाज के लिए परम आचरणीय, अनुकरणीय तथा कल्याणकारी है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति का दायित्व अपने व्यक्तिगत स्वार्थ तक सीमित न रह कर वह समाजोन्मुख बने, ... सापेक्ष बने। इसमें किसी एक व्यक्ति या परिवार का नहीं तो सभी का ...वत विकास निहित है। उन्होंने जिस रामराज्य की कल्पना की है वह आचरण अनुकरण की वस्तु है। न्याय-नीति सम्मत व्यवस्था है।

गोस्वामीजी का समस्त काव्य जनकेंद्रित है। 'सियाराममय सब जग जानी' की सर्वसमावेशक आकाशीय विराट भावना हर समय में समसामयिक है। उनका लेखन लोकसुखाय-जनहिताय है। वे अत्यंत संवेदनशीलता के साथ सजग भाव से जनसाधारण के कष्टों का चित्रण करते हैं, और उन कष्टों के निवारण के उपाय भी बताते हैं। इस संबंध में डॉ. रामविलास शर्मा कहते हैं- "तुलसीदासजी का स्वप्न ...मिक जनता के लिए धरोहर है जिससे प्रेरित होकर वह समाजवाद के लिए मंजिल -दर-मंजिल बढ़ती जाएगी। तुलसी का मानव प्रेम उनकी कविता का स्रोत है। उनके लिए साहित्य न तो सामंतों के मनोरंजन का साधन है, न निरुद्देश्य प्रयोग है।" इस रूप में तुलसीदासजी का साहित्य सामंती विचारधाराओं से, पूँजीवादी साहित्य सिद्धांतों से भी लड़ने की प्रेरणा देता है। इसलिए उन्हें भारतीय संस्कृति एवं जनसामान्य का प्रतिनिधि कवि माना जाता है।

निष्कर्षत: गोस्वामी तुलसीदासजी मूल रूप से एक श्रेष्ठ मानवतावादी रचनाकार हैं। समाज, साहित्य, संस्कृति आदि सभी स्तरों पर समन्वयशीलता उनके सामाजिक आदर्श का केंद्रीय तत्व है। इस दृष्टि से उनका काव्य लोकमंगलकारी ...व्यदृष्टि का परिचय देता है। उनके क्षात्रधर्मी राम इसी भावना से भरे हैं। मानव प्रेम ...मानव कल्याण गोस्वामी जी के संतत्ववाले स्वभाव का मूल आधार है। यह ...ना उनके लोकनायक होने का प्रमाण कही जा सकती है। भारतीय संस्कृति के अनुसार ही उनकी काव्यभावना मूलत: समन्वयवादी एवं लोक कल्याणकारी रही है। उनमें स्थित भक्त का रूप विराट समन्वयवादी, लोकचिंतक, लोकरक्षक, लोकमंगल के पावन विचारों से ओतप्रोत है, तो उनमें स्थित संत का रूप सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने राम के मर्यादापुरुषोत्तम रूप द्वारा सामाजिक आदर्श प्रस्तुत किया है। लोकधर्मी कवि गोस्वामी तुलसीदासजी के लोकधर्म में मानवमूल्य मर्यादा, सदाचरण, काव्य, अहिंसा, शील, नीति, परोपकार, त्याग, समर्पण, कर्तव्यबोध, बंधुत्व, मित्रत्व आदि महत्वपूर्ण तत्व हैं। इस रूप में वे लोकचेतना, लोकधर्म, लोकहृदय के सर्वमान्य कवि ठहरते हैं। कुल मिलाकर उनका काव्य आज अत्यंत प्रासंगिक है।

****

संदर्भ सूची :

विद्यासागर, डॉ. पोरवाल उर्मिला, सेतू, मई- 2020

उद्धृत - डॉ. विद्यारानी, तुलसी का भारतीय संस्कृति को योगदान, संकल्य, जुलाई-सितम्बर पृ. ५२.

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, पृ.

डॉ. विद्यारानी, तुलसी का भारतीय संस्कृति को योगदान, संकल्य, जुलाई-सितंबर-२०१५, पृ. 54.

डॉ. शर्मा रामविलास, परंपरा का मूल्यांकन, पृ. 83.

हमारा दुख अपना ही रहा

डॉ. वैशाली खेडकर

सहायक प्राध्यापक ,हिंदी विभाग

महात्मा फुले महाविद्यालय- पिंपरी, पुणे- 27 मो.9850337233

"चाहती हूँ मैं/नगाड़े की तरह बजे
मेरे शब्द और निकल पड़ें लोग
अपने अपने घरों से सडकों पर.." -निर्मला पुतुल

प्रसिद्ध कवयित्री निर्मला पुतुल की ये पंक्तियाँ आदिवासी समाज के भीतर नयी उर्जा और साहस भरती है. शब्द ताकतवर होते हैं, दिलो-दिमाग पर असर करते हैं.इसी शब्द सामर्थ्य से सभ्य समाज ने गुलामी की अवधारणा को विकसित किया. धर्म को अपने स्वार्थ के अनुरूप विकसित किया. इसी शब्द छल ने शोषित समाज को पीढ़ी-दर-पीढ़ी नरकनुमा यातनाओं में धकेल दिया लेकिन अब अक्षर ज्ञान ने इस शोषण से मुक्ति को संभव बनाया है. दरअसल यह शब्द लड़ाई का औजार है.इसी औजार से दलित और स्त्री ने अपनी लड़ाई लड़ी है. आदिवासी समाज भी इसी का प्रयोग कर अपने अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई लड़ रहा है. आदिवासी भारत का मूल निवासी है. भारत की जिस सभ्यता और संस्कृति पर हमें गर्व है वह इनके भीतर ही जीवित है. सभी समाज तो अपने क्षुद्र स्वार्थ एवं अहं के नामपर अपनी संस्कृति को भूला चुके है. किंतु गरीबी और आर्थिक अभाव में भी आदिवासी समाज ने अपनी मानवीयता का दामन नहीं छोड़ा है. आदिवासी समाज पर अनगिनत अत्याचार हुए, इन्हें जंगलों में खदेड़ा गया, लगातार उनकी संस्कृति,सभ्यता एवं जीवनशैली को मिटाने की कोशिश की गयी. मगर आदिवासी समाज ने अपनी मूल पहचान को कभी मिटने नहीं दिया.भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू ने आदिवासी समाज के संदर्भ में कहा था, "भारत के आदिवासी हजारों.वर्षों से इस देश के सबसे पुराने निवासी है. बाद में यहाँ आनेवाले समूहों ने इन आदिवासियों को दबाकर रखा है.उनकी जमीन छीन ली. उन्हें पर्वतों में खदेड़ा और उन्हें उत्पीड़कों ने अपने हित में बेगार करने को विवश किया. आज विभिन्न समूहों के लगभग 4 करोड़ आदिवासी (अब करीब 10 करोड़)जिन पर सरकार को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, चूँकि वे राष्ट्रीय संस्कृति से अलग-थलग रह रहे हैं." मा. प्रधानमंत्री जी ने जो कहा था उसका असर अब तक नहीं दिख रहा है. अब तो जल,जंगल और जमीन केलिए उनका संघर्ष शुरू है.

वनोंऔर जंगलों पर आदिवासी समाज का पुश्तैनी अधिकार है. परंपरा से ही जल,जंगल और जमीन धरोहर के रूप में उन्हें प्राप्त है. वे प्रकृति के संरक्षक है. उसकी गोद में कई पीढ़ियों ने जन्म लिया है और मृत्युपरांत उसी में दफ़न होकर खाद बनकर प्रकृति को सिंचित किया है. वे प्रकृति से उतना ही लेते हैं जितनी की ज़रूरत है. प्रकृति उनके लिए माँ होती है. इसी मातृ रक्षा में कई पीढ़ियों ने अपना बलिदान तक दिया है. इनकी जीवनशैली अन्य तथाकथित सभ्य समाज से अलग है. सभ्य समाज की तुलना में अनपढ़ आदिवासी समाज में खून-ख़राबा, बलात्कार की घटनाएँ नगण्य है.आदिवासी समाज प्रकृति से अपनी संस्कृति निर्माण करता है. जंगल एक पेड़ से नहीं समूह से बनता है. आदिवासी समाज में भी सामूहिकता या समूह मूल्य सर्वोच्च है. यह मूल्य आज भी बरक़रार है. प्रकृति की गोद में ही अनूठी आदिवासी संस्कृति का रोपण हुआ है. किंतु विस्थापन ने आदिवासी समाज के सम्मुख नयी चुनौती खड़ी की है. सरकार और पूंजीपतियों की सांठ-गांठ से प्राकृतिक दोहन का कार्य जोर-शोर से शुरू है. मन माना कानून बनाकर सरकार पूंजीपतियों के आगे जंगलों को परोस रही है. जिसमेंआदिवासी अपनी पुश्तैनी धरोहर से बेदखल हो रहे हैं. जैसे,"पहले भूमि अधिग्रहण व छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट जैसे कानून के तहत आदिवासियों की जमीन लेने पर रोक थी. इसके प्रावधानों से मुक्ति पाने के लिए सरकार ने मनमाने ढंग से संशोधन किए. सरकार की इस नीति के कारण 1991 और 1995 की अवधि के बीच केवल झारखण्ड में पचास हजार एकड़ भूमि से पंद्रह लाख लोग विस्थापित हुए है,जिसमें 41.27 प्रतिशत आदिवासी है."वर्तमान समय में यह संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है. सरकार द्वारा आदिवासियों की ज़मीनहड़पने का षडयंत्र शुरू हुआ है विकास के नामपर इनकी जमीनें हड़पकर इन्हें जबर्दस्ती विस्थापित

ISSN-1504Nagfani RNIN.-UTTHIN/2010/34408
MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA PIMPRI,PUNE-17